Publication	Edition	Date	Page No.
Hamara Metro	New Delhi	5th Dec 2012	04

आधुनिक व प्राचीन इतिहास काल के बीच सेतु बनेगा रॉक आर्ट

–दिल्ली में होगा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली 4 दिसम्बर। आधुनिक और प्राचीन इतिहास काल के बीच सेतु बनाने के लिए यहां एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन रॉक आर्ट 2012 का आयोजन होने जा रहा है। 6 से 13 दिसम्बर तक चलने वाले इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पाषाण कला अनुसंधान तथा प्रलेखन मामलों में हाल की प्रगति पर केंद्रित रहेगा। इसका शुभारंभ उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी करेंगे। केंद्रीय संस्कृति मंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच तथा इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रॉक आर्ट आर्गेनाइजेशंस के गवर्नर तथा सीईओ प्रो. आर. जी. बेडनेरिक इस मौके पर मौजूद रहेंगे। इस महोत्सव में 7 दिसंबर से जनवरी 2013 तक भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर एक प्रदर्शनी चलेगी। पाषाण कला की अनूठी विशेषता से लोगों को रूबरू कराने के लिए मध्य प्रदेश के रायसेन जिले स्थित विश्व विरासत के पुरातात्विक महत्व वाले भीमबेटका में एक गुफानुमा आकृति तैयार की गई है।

वैश्विक पाषाण कला से लैस यह प्रदर्शनी विभिन्न महाद्वीपों के अलग–अलग कला रूपों को प्रदर्शित करने के लिए अलग–अलग क्षेत्रों में बांटी गई है। प्रदर्शनी में 4,000 से 12,000 ईसा पूर्व के पूर्व ऐतिहासिक युग से संबंधित खंडित पाषाण कला भी दिखाई जाएगी। यह जानकारी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की सदस्य दिपाली खन्ना ने आज यहां पत्रकारों को दी। उनके मुताबिक भारतीय खंड में भी विभिन्न कबायली कला रूपों को दिखाया जाएगा जो पाषाण कला की निरंतर चली आ रही परंपरा व्यक्त करते हैं। इन कला रूपों में सौरा (ओडिशा), वर्ली (महाराष्ट्र) और राठवा (गुजरात) को शामिल किया जाएगा। कार्यशाला के दौरान पूरी दुनिया में पाषाण कला के पारखी और कलाकार पाषाण कला की यात्रा, तकनीकों और इसकी आकृतियों में इस्तेमाल होने वाली सामग्रियों के बारे में जानकारी देंगे और साथ ही अलग–अलग देशों की कला की समानता तथा विभिन्नताओं का वर्णन करेंगे।

उनके मुताबिक भारत में पाषाण कला की समृद्ध वि. रासत और देशभर के विभिन्न समुदायों में इसकी जीवंत परंपरा को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के शिक्षित तथा पारंपरिक कलाकारों के बीच एक संवाद शुरू करने की पहल है। यह सम्मेलन एक संपूर्ण अंतर–विभागीय शोध के लिए विशेष सजगता से एक अलग आकर्षण में ढाला जा रहा है।

पांच महाद्वीपों (एशिया, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप तथा अमेरिका) के 20 देशों के जाने–माने विद्वान सम्मेलन में विशेष व्याख्यानों के जरिये पाषाण कला के हालिया विकास, चुनौतियों और समस्याओं पर वैश्विक स्तर की बारीकियों का जिक्र करते हुए अपने–अपने महाद्वीपों में पाषाण कला की मौजूदा समीक्षा और संपूर्ण स्थिति प्रस्तुत करेंगे। बोलिविया, चीन और कई अन्य देशों के विशेषज्ञ तथा विद्वान पाषाण कला के संरक्षण से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर व्याख्यान देंगे।

स्वर्णिम कला को बचाने के लिए आगे आएं संस्थाएं अंतरराष्ट्रीय रॉक आर्ट महोत्सव के परियोजना निदेशक बी. एल. मल्ला के मुताबिक हमें अपने अतीत और वर्तमान, क्षेत्रीय और वैश्विक, आंशिक और संपूर्ण, खुद तथा विश्व में अन्य एवं पाषाण कला की परंपराओं की सतह और संदर्भ की चक्रीय गति को समझने की जरूरत है।

कहने की जरूरत नहीं है कि पाषाण कला की उपेक्षा के कारण यह युवा पीढ़ियों के लिए अतीत की चीज हो गई है। अब वक्त आ गया है कि विभिन्न संस्थाएं आगे आएं और इतिहास की एक स्वर्णिम कला की पहचान को बचाकर रखें।

असल जड़ पता नहीं दिपाली

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की सदस्य दिपाली खन्ना के मुताबिक इस वक्त पूरी दुनिया जिस प्रौद्योगिकी विकास तथा संचार के हाईटेक साधनों पर बात कर रही है, क्या हममें से किसी को इसकी असल जड़ के बारे में पता है? प्राकृतिक चट्टानों पर मानव निर्मित चित्राकृतियां ही प्राचीन काल में अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त साधन था जिसे आज हम रॉक आर्ट या पाषाण कला के नाम से जानते हैं। पाषाण कला की ये आकृतियां अतीत और वर्तमान के बीच सांस्कृतिक संवाद का एक साधन हैं। कला के इस रूप के बारे में जागरूकता फैलाने तथा इसे बचाए रखने की सख्त आवश्यकता पर जोर देने के प्रयास के तहत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय, मिलकर अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा कार्यशालाओं के अलावा रॉक आर्ट का आयोजन कर रहा है।

दिपाली खन्ना सचिव सदस्य इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर आर्ट में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए

Publication	Edition	Date	Page No.
Navbharat Times	New Delhi	5th Dec 2012	5

रॉक आर्ट फेस्ट 7 से, चट्टानों में 20 देशों का इतिहास दिखेगा

दिल्ली में गुफा और गुफा में रॉक आर्ट

कात्यायनी उप्रेती ॥ जनपथ

दिल्ली में रॉक आर्ट.. अगर यह सुनते ही आपके दिमाग में म्यूजिकल शो दौड़ने लगा है, तो थम जाइए। यह आर्ट आपको संगीत नहीं बल्कि हमारे पूर्वजों के आर्ट लव से मुलाकात करवाएगी। 7 दिसंबर से दिल्ली में रॉक आर्ट फेस्टिवल शुरू हो रहा है, जिसमें भारत ही नहीं पांच कॉन्टिनेंट के 20 देशों की रॉक आर्ट नजर आएगी। इंदिरा गांधी नैशनल सेंटर फॉर दी आर्ट्स (आईजीएनसीए) में 25 जनवरी तक रॉक आर्ट एग्जिबिशन आपके लिए सजी रहेगी। यहां मध्य प्रदेश, ओडिसा, झारखंड, उत्तराखंड, लद्दाख, उत्तर प्रदेश, केरल समेत पांच महाद्वीपों की आर्ट एक बड़ी सी गुफा में एकसाथ उतरकर आ रही है।

भारत में 1068 साइट ऐसी हैं, जहां रॉक आर्ट ढूंढी गई हैं। 1200-8000 बीसी पुरानी यानी प्रि-हिस्टॉरिक वक्त की ये आर्ट उन इलाकों में हैं, जहां पहुंचना आसान नहीं। आईजीएनसीए की मेंबर सेक्रेटरी दिपाली खन्ना बताती हैं, उस वक्त की रोजमर्रा की जिंदगी को बिखेरती इस आर्ट तक लोगों की पहुंच नहीं है, यहां तक कि साइट के आसपास रहने वालों को भी इसकी अहमियत नहीं पता, जबकि भारत ऐसा देश है जहां ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के साथ-साथ सबसे ज्यादा साइट हैं। वर्ली, मधुबनी, सौरा, राठवा जैसी आर्ट फॉर्म से सजी इन साइट पर हम रिसर्च कर रहे हैं। अभी मौजूद साइट्स में से हमने 14 पर्सेंट का ही डॉक्युमेंटेशन किया है। दरअसल, बदलते एनवायरनमेंट और इंसान के बीच चट्टानों को सहेजना बड़ा चैलेंज है। 1993 से ही इन्हें बचाने का सिलसिला दौड़ रहा है।

Rahul Manav

बड़ी सी गुफा में दिखेगी पांच महाद्वीपों की कला

एग्जिबिशन में भारत के अलग-अलग इलाकों की आर्टवर्क की रेप्लिका वर्क दिखाई देगा। इंटरनैशनल रॉक आर्ट फेस्टिवल के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. मल्ला कहते हैं, ओडिशा की सौरा, महाराष्ट्र की वर्ली, गुजरात की राठवा जैसी कई आर्ट फॉर्म यहां नजर आएगी। यहां वर्कशॉप भी होगी, जिसमें 20 देशों से पाषाण काल के लगभग 50 एक्सपर्ट्स पहुंचेंगे जो आर्ट के बारे में और इससे बचाने को लेकर अपनी राय रखेंगे। इनमें इंटरनैशनल फेडरेशन ऑफ रॉक आर्ट ऑर्गनाइजेशन के प्रो. रॉबर्ट बेडनोरिक शामिल हैं। रॉक आर्ट को सहेजने में काम में जुटे प्रो. यशपाल मठपाल जैसे आर्टिस्ट को भी यहां नवाजा जाएगा। एग्जिबिशन के लिए 300 से ज्यादा स्कूलों को इनवाइट किया गया है।

Publication	Edition	Date	Page No.
Dainik Bhaskar	New Delhi	5th Dec 2012	2

रॉक फेस्टिवल में दिखेगा मानव अभिव्यक्ति का इतिहास

पहल एशिया सहित पांच महाद्वीपों के होमोसेपियन युग में इंसानों द्वारा दीवारों पर उकेरी गई टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों की भाषा पढ़ने और जानने का मौका मिलेगा

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

मोबाइल, इंटरनेट जैसे डिजिटल कम्यूनिकेशन और हाइटेक लाइफ स्टाइल के बीच अगर जंगलों की पुरानी गुफाओं की दीवारों पर लकीरों के माध्यम से अपनी बातों को शेयर करने का अनुभव मिले तो क्या बात है। दरअसल कुछ ऐसे ही अनुभव राजधानी के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रांगण में मिलने वाले हैं। यहां आइजीएनसीए और दिल्ली सरकार संस्कृति मंत्रालय पहला इंटरनेशनल रॉक फेस्टिवल का आयोजन कर रहा है, जिसमें एशिया सहित पांच महाद्वीपों के होमोसेपियन युग में इंसानों द्वारा दीवारों पर उकेरी गई टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों की भाषा पढ़ने और जानने का मौका दिया जाएगा। यहां ऐसा माहौल निर्मित किया जा रहा है कि प्रवेश करते ही दर्शक खुद को लाखों साल पीछे महसूस करेंगे। इसके लिए यहां खास मॉडल, शेल्टर की मदद ली जा रही है।

फेस्टिवल के प्रोजेक्ट डायरेक्टर बीएल मल्ला ने बताया कि फेस्टिवल में हिस्सा लेने के लिए इटली, स्पेन, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित 20 देशों के विशेषज्ञ पहुंच रहे हैं, जो पांच महाद्वीपों के प्राचीन पाषाण कृतियों के विषय में जानकारी देंगे। इसके अलावा भारत की पाषाण कृतियों के अलावा ओडिशा का साउरा, महाराष्ट्र से वर्ली और गुजरात का राथवा को भी यहां प्रदर्शित किया जाएगा।

प्रोजेक्ट डायरेक्टर ने बताया कि दरअसल किसी भी देश की पाषाण कृतियां वहां की धरोहर हैं जो उनकी जीवनशैली के शुरुआती दिनों को दर्शाती है, इसलिए इन्हें सहेजना अत्यावश्यक है। विदेशों की संस्कृति और जीवन शैली में अब पाषाण युगीन आर्ट खत्म हो चुके हैं लेकिन भारत की संस्कृति में ये आज भी मौजूद है।

क्या है खास

आयोजन स्थल की संरचना इस प्रकार की गई है जहां भारतीय और पांच महाद्वीपों को दो अलग हिस्से में बांटा गया है। माटी घर में भारतीय पाषाण आर्ट का अदभुत डिस्प्ले तैयार किया गया है। पांचों महाद्वीपों की दुर्लभ पाषाण कृतियों को समग्रता से समझने के लिए इनके पुरातत्व दृष्टिकोण, नृवंश विज्ञान दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी रूबरू कराया जाएगा। यहां ओडिशा, महाराष्ट्र और गुजरात के आदिवासी समुदाय के कलाकारों को भी बुलाया गया है जो पाषाणकाल से प्रभावित अपनी कला का यहां पिक्टोरियल डेमो पेश करेंगे। इस कार्यशाला के दौरान बच्चे इन पाषाण युगीन कला को छूकर और करीब से अनुभव कर सकते हैं। फेस्टिवल में प्रतिदिन रॉक आर्ट पर आधारित विषयों पर चर्चाओं का भी आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन दर्शकों के लिए शुक्रवार सुबह 9.30 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहेगा।

Publication	Edition	Date	Page No.
Rashtriya Sahara	New Delhi	5th Dec 2012	7

रॉक आर्ट को समझने जुटेंगे 20 देशों के विद्वान

नई दिल्ली (एसएनबी)। पाषाण काल में चट्टानों पर उकेरी गई चित्राकृतियां उस वक्त अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम हुआ करती थीं जो आज हमारे पास धरोहर के रूप में मौजूद हैं, जो वर्तमान और अतीत के बीच सांस्कृतिक संवाद का एक साधन बनी हुई हैं। चट्टानों पर उकेरी गईं इन आकृतियों को सहेजने और इस कला के बारे में लोगों के बीच जागरूकता फैलाने की जरूरत है। इस कला को किस तरह से संरक्षित किया जा सकता है इस बारे में बातचीत करने 20 देशों के विद्वान बृहस्पतिवार से राजधानी में जुटेंगे। इस दौरान वह इस कला को बचाए रखने पर चर्चा करेंगे। इस कला का प्रदर्शन चित्रों के माध्यम से किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और केंद्र सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय की ओर से किया जा रहा है।

▶6-13 दिसम्बर तक आयोजित होगा रॉक आर्ट महोत्सव

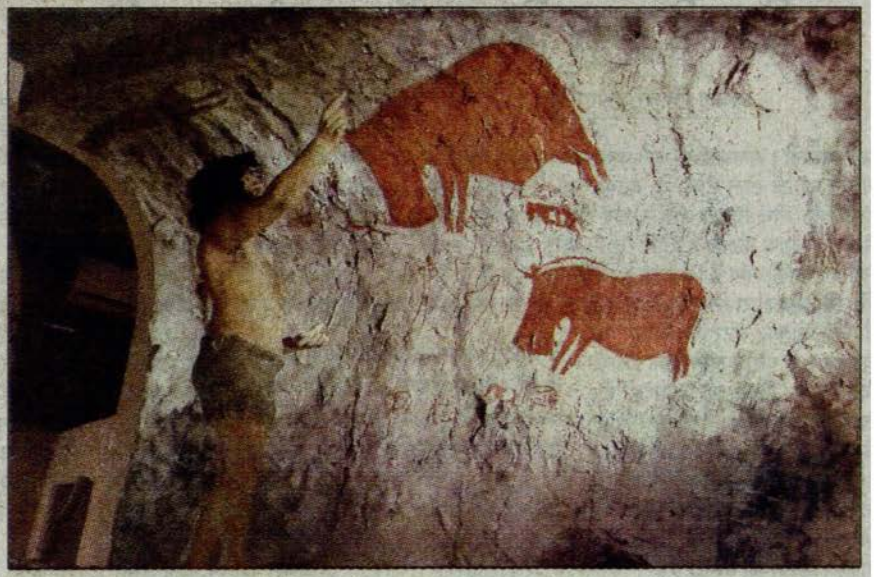

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में आईजीएनसीए की सदस्य सचिव दीपाली खन्ना ने यह जानकारी दी। रॉक आर्ट महोत्सव शीर्षक से आयोजित होने वाला यह महोत्सव छह से 13 दिसम्बर तक आईजीएनसीए स्थिति माटीघर में चलेगा। महोत्सव का शुभारंभ उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी, केंद्रीय संस्कृति मंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच तथा इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रॉक आर्ट आर्गनाइजेशन के गवर्नर तथा सीईओ प्रो. आरजी बेडनेरिक संयुक्त रूप से करेंगे। उन्होंने कहा कि इस आयोजन से पाषाण कला के उद्भव और इसके बाद इसकी यात्रा को समझने में हमें मदद मिलेगी। यह महोत्सव आम आदमी को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान को जोड़ने में मदद करेगा। भारत में यह कला लोक तथा जनजातीय कला रूप में अभी तक जिंदा है। लिहाजा इस तरह का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करना आईजीएनसीए के लिए गर्व की बात है।

अंतरराष्ट्रीय रॉक आर्ट महोत्सव के परियोजना निदेशक बीएल मल्ला ने कहा कि हमें अपने अतीत और वर्तमान, क्षेत्रीय और वैश्विक, आंशिक और संपूर्ण, खुद तथा विश्व में अन्य एवं पाषाण कला की परंपराओं की सतह और संदर्भ की चक्रीय गति को समझने की जरूरत है। इस कला की उपेक्षा किए जाने से आज यह युवा पीढ़ी के लिए अतीत की चीज हो गई है। इस कला को समझने और इसे बचाए रखने की जरूरत है। एक सप्ताह तक चलने वाले महोत्सव में 20 देशों के विद्वान इस कला के बारे में विचार रखेंगे।

Publication	Edition	Date	Page No.
Punjab Kesari	New Delhi	5th Dec 2012	04

इतिहास काल के बीच का सेतु बनेगा 'रॉक आर्ट'

दिल्ली में होगा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर प्रदर्शनी आयोजित

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर (ब्यूरो) : आधुनिक और प्राचीन इतिहास काल के बीच सेतु बनाने के लिए यहां एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन रॉक आर्ट 2012 का आयोजन होने जा रहा है। 6 से 13 दिसम्बर तक चलने वाले इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से पाषाण कला अनुसंधान तथा प्रलेखन मामलों में हाल की प्रगति पर केंद्रित रहेगा। इसका शुभारंभ उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी करेंगे। केंद्रीय संस्कृति मंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच तथा इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रॉक आर्ट आर्गेनाइजेशंस के गवर्नर तथा सीईओ प्रो. आर. जी. बेडनेरिक इस मौके पर मौजूद रहेंगे।

इस महोत्सव में 7 दिसंबर से जनवरी 2013 तक भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर एक प्रदर्शनी चलेगी। पाषाण कला की अनूठी विशेषता से लोगों को रूबरू कराने के लिए मध्य प्रदेश के रायसेन जिले स्थित विश्व विरासत के पुरातात्विक महत्व वाले भीमबेटका में एक गुफानुमा आकृति तैयार की गई है। वैश्विक पाषाण कला से लैस यह प्रदर्शनी विभिन्न महादेशों के अलग-अलग कला रूपों को प्रदर्शित करने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में बांटी गई है। प्रदर्शनी में 4,000 से 12,000 ईसा पूर्व के पूर्व ऐतिहासिक युग से संबंधित खंडित पाषाण कला भी दिखाई जाएगी।

यह जानकारी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की सदस्य दिपाली खन्ना ने आज यहां पत्रकारों को दी। उनके मुताबिक भारतीय खंड में भी विभिन्न कबायली कला रूपों को दिखाया जाएगा जो पाषाण कला की निरंतर चली आ रही परंपरा व्यक्त करते हैं। इन कला रूपों में सौरा (ओडिशा), वर्ली (महाराष्ट्र) और राठवा (गुजरात) को शामिल किया जाएगा। कार्यशाला के दौरान पूरी दुनिया में पाषाण कला के पारखी और कलाकार पाषाण कला की यात्रा, तकनीकों और इसकी आकृतियों में इस्तेमाल होने वाली सामग्रियों के बारे में जानकारी देंगे और साथ ही अलग-अलग देशों की कला की समानता तथा विभिन्नताओं का वर्णन करेंगे।

उनके मुताबिक भारत में पाषाण कला की समृद्ध विरासत और देशभर के विभिन्न समुदायों में इसकी जीवंत परंपरा को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के शिक्षित तथा पारंपरिक कलाकारों के बीच एक संवाद शुरू करने की पहल है। यह सम्मेलन एक संपूर्ण अंतर-विभागीय शोध के लिए विशेष सजगता से एक अलग आकर्षण में ढाला जा रहा है।

5 देशों के विद्वान लेंगे भाग : पांच महादेशों (एशिया, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप तथा अमेरिका) के 20 देशों के जाने-माने विद्वान सम्मेलन में विशेष व्याख्यानों के जरिये पाषाण कला के हालिया विकास, चुनौतियों और समस्याओं पर वैश्विक स्तर की बारीकियों का जिक्र करते हुए अपने-अपने महादेशों में पाषाण कला की मौजूदा समीक्षा और संपूर्ण स्थिति प्रस्तुत करेंगे। बोलिविया, चीन और कई अन्य देशों के विशेषज्ञ तथा विद्वान पाषाण कला के संरक्षण से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर व्याख्यान देंगे।

स्वर्णिम कला को बचाने के लिए आगे आएं संस्थाएं : अंतर्राष्ट्रीय रॉक आर्ट महोत्सव के परियोजना निदेशक बी. एल. मल्ला के मुताबिक हमें अपने अतीत और वर्तमान, क्षेत्रीय और वैश्विक, आंशिक और संपूर्ण, खुद तथा विश्व में अन्य एवं पाषाण कला की परंपराओं की सतह और संदर्भ की चक्रीय गति को समझने की जरूरत है। कहने की जरूरत नहीं है कि पाषाण कला की उपेक्षा के कारण यह युवा पीढ़ियों के लिए अतीत की चीज हो गई है। अब वक्त आ गया है कि विभिन्न संस्थाएं आगे आएं और इतिहास की एक स्वर्णिम कला की पहचान को बचाकर रखें।

असल जड़ पता नहीं : दिपाली इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) की सदस्य दिपाली खन्ना के मुताबिक इस वक्त पूरी दुनिया जिस प्रौद्योगिकी विकास तथा संचार के हाईटेक साधनों पर बात कर रही है, क्या हममें से किसी को इसकी असल जड़ के बारे में पता है? प्राकृतिक चट्टानों पर मानव निर्मित चित्राकृतियां ही प्राचीन काल में अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त साधन था जिसे आज हम रॉक आर्ट या पाषाण कला के नाम से जानते हैं।

Publication	Edition	Date	Page No.
Hindustan	New Delhi	5th Dec 2012	5

रॉक आर्ट 2012 का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 6 से

नई दिल्ली। (क.सं) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा कार्यशालाओं के अलावा रॉक आर्ट 2012 पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने जा रहे हैं।

यह कार्यक्रम 6 से 13 दिसंबर तक चलेगा और मुख्य रूप से पाषाण कला अनुसंधान तथा प्रलेखन मामलों में हालिया प्रगति पर केंद्रित रहेगा। कार्यक्रम का उद्घाटन देश के उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी, केंद्रीय संस्कृति मंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच व इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रॉक आर्ट ऑर्गेनाइजेशंस के गवर्नर तथा सीईओ प्रो.आर. जी.बेडनेरिक करेंगे।

इस महोत्सव में 7 दिसंबर 2012 से जनवरी 2013 तक भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर एक प्रदर्शनी चलेगी। पाषाण कला की अनूठी विशेषता से लोगों को रूबरू कराने के लिए मध्य प्रदेश के रायसेन जिले स्थित विश्व विरासत के पुराताविक महत्व वाले भीमबेटका में एक गुफानुमा आकृति तैयार की गई है।

Publication	Edition	Date	Page No.
National Dunia	New Delhi	5th Dec 2012	4

'पाषाण कला 2012' सम्मेलन छह दिसंबर से

नई दिल्ली। अतीत और वर्तमान के बीच सांस्कृतिक संवाद के साधनों में से एक पाषाण कला के बारे में जागरूकता फैलाने तथा इसके संरक्षण के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और संस्कृति मंत्रालय पाषाण कला पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं। इस सम्मेलन में पाषाण कला अनुसंधान और प्रलेखन मामलों पर हाल में हुई प्रगति पर विचार-विमर्श किया जाएगा। सम्मेलन का उद्घाटन उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी, केंद्रीय संस्कृतिमंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच करेंगे। इसके अलावा सात दिसंबर 2012 से जनवरी 2013 तक भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। भारतीय खंड में सौरा(उड़ीसा), वर्ली (महाराष्ट्र) और राठवा (गुजरात) की पाषण कला की प्रतिकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा।

Publication	Edition	Date	Page No.
HariBhoomi	New Delhi	5th Dec 2012	3

नई दिल्ली। दिसंबर में होने वाले 'रॉक आर्ट 2012' की घोषणा करते हुए अंतरराष्ट्रीय रॉक आर्ट फेस्टिवल के प्रोजेक्ट डायरेक्टर बीएल मल्ला व इंदिरा गांधी सेंटर फॉर आर्ट्स की सचिव दीपाली खन्ना।

Publication	Edition	Date	Page No.
Virat Vaibhav	New Delhi	5th Dec 2012	5

'पाषाण कला 2012' सम्मेलन कल से

NK

नई दिल्ली। अतीत और वर्तमान के बीच सांस्कृतिक संवाद के साधनों में से एक पाषाण कला के बारे में जागरूकता फैलाने तथा इसके संरक्षण के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और संस्कृति मंत्रालय पाषाण कला पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहे है। एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार छह से 13 दिसंबर 2012 तक आयोजित इस सम्मेलन में पाषाण कला अनुसंधान और प्रलेखन मामलों पर हाल में हुई प्रगति पर विचार विमर्श किया जाएगा। सम्मेलन का उद्घाटन उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी, केंद्रीय संस्कृतिमंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच और इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रॉक ऑर्ट आर्गेनाइजेशंस के गवर्नर तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी आर जी बेडनेरिक करेंगे इसके अलावा सात दिसंबर 2012 से जनवरी 2013 तक भारतीय तथा वैश्विक पाषाण कला पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। भारतीय खंड में सौरा (ओडिशा), वर्ली (महाराष्ट्र) और राठवा (गुजरात) की पाषण कला की प्रतिकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा।

Publication	Edition	Date	Page No.
Naya Dunia	New Delhi	5th Dec 2012	03

'पाषाण कला 2012' सम्मेलन छह से

नई दिल्ली। अतीत और वर्तमान के बीच सांस्कृतिक संवाद के साधनों में से एक पाषाण कला के बारे में जागरूकता फैलाने तथा इसके संरक्षण के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और संस्कृति मंत्रालय पाषाण कला पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं। एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार छह से 13 दिसंबर 2012 तक आयोजित इस सम्मेलन में पाषाण कला अनुसंधान और प्रलेखन मामलों पर हाल में हुई प्रगति पर विचार विमर्श किया जाएगा। सम्मेलन का उद्घाटन उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी, केंद्रीय संस्कृतिमंत्री चंद्रेश कुमारी कटोच और इंटरनेशनल फेडरेशन आफ राक आर्ट आर्गेनाइजेशंस के गवर्नर तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी आरजी बेडनेरिक करेंगे।